अदालत से

बचने का रास्ता

अदालत से

बचने का रास्ता

adālat se bachne kā rāsta

The Way to Escape Judgment
(Urdu—Hindi script)

© 2019 MIK
published and printed by
Good Word, New Delhi

for enquiries or to request more copies:
askandanswer786@gmail.com

अल्लाह रहीम है

हक़ तआला की अनगिनत सिफ़ात में से सबसे अहम सिफ़त उसका रहम है। कम ही ऐसे लोग होंगे जो रहीमो-ग़फ़ूर ख़ुदा को याद करते हुए तसल्ली न पाते हों। हज़रत मूसा की मारिफ़त अल्लाह ने फ़रमाया,

> रब, रब, रहीम और मेहरबान ख़ुदा। तहम्मुल, शफ़क़त और वफ़ा से भरपूर। वह हज़ारों पर अपनी शफ़क़त क़ायम रखता और लोगों का क़ुसूर, ना-फ़रमानी और गुनाह माफ़ करता है।
> (ख़ुरूज 34:6-7)

अल्लाह आदिल है

लेकिन इस हवाले में न सिर्फ़ रहम का ज़िक्र है। अल्लाह के अदल का भी बयान किया गया है :

> लेकिन वह हर एक को उसकी मुनासिब सज़ा भी देता है। (ख़ुरूज 34:7)

रहीम ख़ुदा आदिल भी है, इसलिए इनसान अपने ख़ालिक़ो-मालिक के सामने जवाबदेह है।

इनसान अकसर अल्लाह का अदल नज़रअंदाज़ करता है। वह अपने आपको यह धोका देता है कि चूँकि अल्लाह रहीम है इसलिए वह मेरे गुनाहों को ज़रूर माफ़ करेगा, चाहे मैं कितना ही ख़राब क्यों न हूँ। ऐसे लोग कलामे-इलाही के चंद हवालाजात से ग़लत मतलब निकालकर अपने आपको झूटी तसल्ली देते हैं।

इस में कोई शक नहीं कि इनसान महज़ अल्लाह की मेहरबानी और फ़ज़ल ही से नजात पा सकता है। लेकिन यह बात भी पक्की है कि हमारी अबदी क़िस्मत का फ़ैसला न सिर्फ़ अल्लाह के रहम बल्कि इससे बढ़कर उसके अदल पर मबनी होगा। मुनासिब नहीं कि फ़क़त अल्लाह के फ़ज़लो-करम ही को अहमियत दी जाए।

इलाही अदालत से किस तरह बचें?

अब सवाल यह है कि इनसान किस तरह अल्लाह के अदल यानी अदालत से बचे? वह कभी भी अल्लाह के तमाम अहकाम को पूरा नहीं कर सकता। दूसरी तरफ़ अल्लाह अपना रहम और अदल किस तरह क़ायम रख सकता है? वह किस तरह अपना अदल नज़रअंदाज़ करके हमें माफ़ कर सकता है?

पहली ख़ुशख़बरी यह है कि हक़ तआला नहीं चाहता कि कोई हलाक हो जाए (2 पतरस 3:9)।

दूसरी ख़ुशख़बरी यह है कि अल्लाह तआला ने इनसान के लिए अदालत से बचने का रास्ता खोल दिया है। इंजील जलील में मरक़ूम है,

> राह यह है कि जब हम ईसा मसीह पर ईमान लाते हैं तो अल्लाह हमें रास्तबाज़ क़रार देता है। ...क्योंकि अल्लाह ने ईसा को उसके ख़ून के बाइस कफ़्फ़ारा का वसीला बनाकर पेश किया, ऐसा कफ़्फ़ारा जिससे ईमान लानेवालों को गुनाहों की माफ़ी मिलती है। ...इससे वह ज़ाहिर करता है कि वह रास्त है और हर एक को रास्तबाज़ ठहराता है जो ईसा पर ईमान लाया है। (रोमियों 3:22,25,26)

ग़रज़, अल-मसीह के वसीले से अल्लाह ने अपना रहम और अदल क़ायम रखते हुए हमारे बचाव का इंतज़ाम किया है।

सहीह राह को चुनने की दावत

आपने बहुत दफ़ा रेलवे फाटक बंद पाया होगा। लेकिन क्या आपके दिल में कभी यह ख़याल गुज़रा है कि गवर्नमेंट ने मुझे तंग करने के लिए यह फाटक लगवाया है? हरगिज़ नहीं, बल्कि तेज़रफ़्तार गाड़ी को आते देखकर आपने ख़ुदा का शुक्र अदा किया होगा कि आपकी हिफ़ाज़त के लिए यह तसल्लीबख़्श इंतज़ाम किया गया है। लेकिन अगर कोई बेवुक़ूफ़ बेपरवाई से फाटक का कोई लिहाज़ न करे और चलती गाड़ी के नीचे आ जाए तो उसकी मौत का ज़िम्मेदार कौन होगा? गवर्नमेंट या वह ख़ुद? जो कुछ गवर्नमेंट से हो सका, उसने किया। अगर कोई उसके मुक़र्ररकरदा इंतज़ाम को नज़रअंदाज़ करके हलाक हो जाए तो वह ख़ुद इसका ज़िम्मेदार है।

अज़ीज़ दोस्त, अल्लाह ने भी आपकी नजात का पूरा पूरा इंतज़ाम किया है। नजात का रास्ता उसी के लिए खुला है जो हज़रत ईसा का नजातबख़्श काम क़बूल करे।और कोई रास्ता नहीं। यक़ीन

जानिए कि हर दूसरी सूरत में अल्लाह का रहम आपको उसके अदल से नहीं बचाएगा।

आप यह न समझें कि अगर आप अपने ही रास्ते पर चलते रहें तो अल्लाह आपको सिर्फ़ हमदर्दी की बिना पर माफ़ कर देगा। क़तअन नहीं,

> क्योंकि गुनाह का अज्र मौत है जब कि अल्लाह हमारे ख़ुदावंद मसीह ईसा के वसीले से हमें अबदी ज़िंदगी की मुफ़्त नेमत अता करता है।
> (रोमियों 6:23)